International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-10-2021, Accepted: 16-10-2021, Published: 02-11-2021
Volume 7, Issue 6, 2021, Page No. 9-15

युवा समाज को लेकर राष्ट्रवादी भावना में: स्वामी विवेकानन्द

पॉलि भौमिक
सहकारी अध्यापिका (हिन्दी विभाग), रामठाकुर कॉलेज, अगरतला, त्रिपुरा, भारत

सारांश

किसी एक सन्यासी ने युवा समाज को लेकर सपना देखा था। जब युवाएँ अपना आदर्श और मुल्यबोध खो रही थी नरेनद्रजी ने अवतरित होकर इससे बचने का पथ दिखाया। सन्यासी तो थे परंतु तेजदीप्त, वीर तथा साहसी भी। ऐसे ही एक सन्यासी ने १२ जनवरी सन् १८६३ में कलकत्ता (सिमला) में दत्तपरिवार में जन्मग्रहण किया और इस धरती को धन्य किया था। उनका नाम था नरेद्रनाथ दत्त, पिता विश्वनाथ दत्त - विख्यात वकील तथा माता भुवनेश्वरी देवी ईश्वर की एकनिष्ठ साधिका।

विवेकानन्द नवभारत निर्माण का सपना देखते थे और इसके लिए उन्हे युबाआँ पर सबसे बड़ी आस्था थी। युवा शक्ति के भीतर जो अनन्त शक्ति थी वे उसे जगाना चाहते थे। समकालीन भारत का युवा समाज, मोहग्रस्त तथा दिशाहीन होता जा रहा था युवावर्ग लक्ष्यहीन और निराश हैं तथा स्वयं की रक्षा से अज्ञात है। ऐसे अध:पतित युवाओं को पुन: जाग्रत तभी किया जा सकता है जब उनकी पहचान स्वामीजी से करायी जाए। स्वामीजी की उत्साहवर्धक तथा आदर्शमूलक वाणी में अध्यात्मचेतना, समाजचेतना, अर्थनैतिकचेतना, विज्ञानचेतना, भारत के भूत तथा भविष्य की कथा, भारतीय संस्कृति की कथा अंन्तर्निहित है। स्वामीजी बारंबार कहते थे –

"इस दिशाहीन युवासमाज को वर्तमान सुन्दर समाज में परिवर्तन करने के लिए आवश्यक है असंख्य लोगो की। सबसे पहले वे इंसान बने, ज्ञानी इंसान, दयावान इंसान, देश से प्रेम करनेवाला इंसान जो पवित्र और श्रद्धावान हो, ऐसा इंसान जिस दिन जागेगा उस दिन भारतवर्ष सर्वाधिक सुन्दर और बड़ा बन जायेगा, जब हजारो संख्या में नर-नारी खुद के भोग की आकांक्षाओ का त्याग कर सामने आएँगे तथा गरीबी और अशिक्षा के चक्रव्यूह में फँसे लाख-लाख इंसानों के कल्याण कामना हेतु एक निष्ठ होकर जागेगे तभी भारत जाग उठेगा"।

मूलशब्द: स्वामी विवेकानंद, राष्ट्रवादी भावना, नवभारत निर्माण, युवासमाज चेतना, अध्यात्म चेतना, अर्थनैतिक चेतना, पूँजिवाद

प्रस्तावना

विवेकानंदजी का जीवन तथा व्यक्तित्व

स्वामी विवेकानन्द - विश्व के एक सर्वप्रसिद्ध सन््यासी थे जिनका जन्म १२ जनवरी १८६३ में कलकत्ता के शिमला में हुआ था। बचपन में नरेंद्रनाथ नाम रखा गया था। पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के उच्च न्यायालय में प्रतिष्ठित वकील थे। माता भुवनेश्वरी देवी ईश्वर की एकनिष्ठ साधिका थी।

नरेन्द्र ने अनियमित ढंग से शिक्षा ग्रहण की। उनकी प्राथमिक शिक्षा शहर में ही हुई थी परन्तु परिवार के लोगों को अचानक लगा की नरेन कही उद्यंड बच्चों की संगत में न पड़ जाएँ इसलिए उनकी शिक्षा स्थगित रखी गयी। तत्पश्चात् उन्होने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा स्थापित एक संस्थान में पढ़ाई की। नरेन एक अच्छे

विद्वान-कलाकार, खिलाड़ी तथा साथ ही कुस्तिबाज थे। संस्कृत में अत्यंत दखल होने के कारण वे प्रसिद्ध थे। इन सबसे सर्वोपरि वे सत्य के पुजारी थे। असत्य तो बोलना ही नहीँ जानते थे।

चित्र 1

सन् १८७७ में वे अपने पिता के साथ रायपुर गए। रायपुर के किसी भी संस्थान में बंग्ला की शिक्षा नहीँ दी जाती थी इसलिए जबरन घर में ही रहे। वही उनमें तर्क-वितर्क की आदत पड़ी। आत्मविश्वास भी अधिक था। ऐसे में वे दुबारा कलकत्ता आए जहाँ उनकी शिक्षा दुबारा शुरु हुई। स्कूली शिक्षा के बाद कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज में पढ़े। तत्पश्चात् स्कॉटिश चार्च कॉलेज में दर्शन की शिक्षा ग्रहण की।

तभी युवक नरेनद्रनाथ ब्रहम समाज के दो प्रमुख सदस्य देवेद्रनाथ ठाकुर तथा केशवचंद्र सेन के संपर्क में आए । नरेन्द्रनाथ एक प्रश्न को लेकर बड़े परेशान रहने लगे। कौन मुझे ईश्वर के दर्शन करा सकता हें अंतत: उनकी मुलाकात दक्षिणेश्वर के साधक परमहंस श्री श्री रामकृष्ण से हुई जिनके आध्यात्मिक प्रभाव से नरेंन्द्र बदल गए। तभी उनके पिता की आकस्मिक मृत्यु से उनकी कॉलेज की पढ़ाई छूट गई ओर वे नौकरी तलाशने लगे, परंतु यहाँ भी निराशा मिली और दुबारा वे श्री रामकृष्ण से मिले और उन्हें आध्यात्मिक गुरु बना लिया। श्री रामकृष्ण ने उन्हें समझाया की जैसे सब हमें देख सकते हें वैसे ही हम भी उनको उसी रूप में देख सकते है। परंतु नरेन इन बातों से संतुष्ट नहीं हो पाए। वे चाहते थे की रामकृष्ण उन्हें ये साबित कर दिखाए। और फिर समय के साथ - साथ नरेन को भी वह विचित्र अनुभूति अपने जीवन में हुई और वे श्री रामकृष्ण के सबसे प्रमुख शिष्य बन गए। गुरु से उन्हें ये शिक्षा मिली की ईश्वर सभी इंसान में बसते है इसलिए मनुष्यजाति की सेवा ही सच्ची ईश्वर की सेवा है।

गुरु की शिक्षा को सर्वोपरि रखते हुए वे अपने जीवन में आगे बढ़े और रामकृष्ण मठ की स्थापना की जो वर्तमान में जाति, वर्ण, भाषा आदि भेद भूलाकर गरीबो तथा अनाथों की सेवा में निरंतर रत है। बाद में नरेन जब सन्यासी बने तो उनका दुबारा नामकरण हुआ और वे स्वामी विवेकानन्द कहलाए। वे मेरिका के शिकागो शहर में सन् १८९३ में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में गए और एक बेहद चर्चित भाषण दिया उन्होंने अपने लंबे भाषण में विश्ववासियों को बतलाया कि ईश्वर एक है, और सभी धर्म विभिन्न नदियों के समान है जो अंत में सागर में ही विलीन होती है।

उनके इस भाषण से अमरिकी हीं नहीं सारे विश्व के लोगों का ध्यान इनकी ओर आकृष्ट हुआ। इनसे प्रभावित होकर सबने मुक्त कंठ से इनकी प्रशंसा की। अमरीका के सभी समाचार पत्रों में इनके तस्वीर छपे और इनके व्याख्यान पूरे के पूरे प्रकाशित किए जाने लगे, उसके बाद उनके व्याख्यान को सुनने के लिए इतनी अधिक भीड़ हुई कि वहाँ विशेष प्रबन्ध करना पड़ा। इसी क्रम में उन्हें इंग्लैण्ड से निमंत्रण मिला। तीन महीने तक अमरिका में घूम घूम कर हिन्दू-धर्म का प्रचार करते रहे | इसके बाद वे इंग्लैण्ड गए। वहाँ भी तीन महीनें तक रहे। इसी तरह अमरीका और इंग्लैण्ड में दो तीन बार आए और गए और व्याख्यान देते रहे | तीन वर्षो के बाद स्वामी विवेकानंद विदेश से अपने भारत में लौट आए।

स्वास्थ्य गिर जाने के बाद स्वामी विवेकानन्दजी भारत वापस आ गए थे। भारत में सर्वत्र इनका स्वागत होने लगा। भारत में इन्होंने लोगों को उठाया, नया संदेश

दिया। इस तरह कार्य करते हुए ४ जुलाई, १९०२ को भारत माँ के सपूत स्वामी विवेकानन्द सदा के लिए चिर निद्रा की गोदी में सो गए।

स्वामी विवेकानन्द एक सच्चे देशभक्ति थे। वे भारत की गरीबी से, अत्यंत चिंतित थे और इसे दूर हटाने का तीव्र प्रयास भी किया था। वे देश के युवाओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे।

युवाओं को लेकर स्वामाजी का चितंन

वर्तमान युवा समाज मोहग्रस्त, होता जा रहा है। युवावर्ग लक्ष्यहीन और निराश है तथा स्वयं की रक्षा से अज्ञान है। ऐसे युवाओं को पुन:जाग्रत तभी किया जा सकता है जब उनकी पहचान स्वामीजी से करायी जाए। स्वामीजी की उत्साहवर्द्धक तथा आदर्शमूलक वाणी में अध्यात्मचेतना, समाजचेतना, अर्थनैतिकचेतना, विज्ञानचेतना, भारत के भूत तथा भविष्य की कथा अंतर्निहित है। स्वामीजी बारंबार कहते थे –

इस दिशाहीन युवासमाज को वर्तमान युवा समाज में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक है असंख्य लोगों की। पहले इंसान बनाने की आवश्यकता है - ज्ञानी इंसान, दयावान इंसान, देश से प्रेम करने वाला इंसान जो अपने देश के लिए, सर्वस्व त्यागने को तैयार, जो पवित्र और श्रद्धावान हो। ऐसा इंसान जिस दिन जागेगा उस दिन भारतवर्ष सर्वाधिक सुंदर और बड़ा बन जाएगा । जब हजारों संख्या में नर - नारी खुद के भोग की आकांक्षाओं का त्याग कर सामने आएँगे तथा गरीबी और अशिक्षा के चक्रव्यूह में फँसे लाख-लाख इंसानों के कल्याणहेतु एकनिष्ठ होकर युवाएँ जागेंगे तभी भारत जागेगा और समृद्ध बनेगा ....“the land where humanity has attended its highest towards gentleness, towards generosity, towards purity, towards calmness, above all the land of introspection and of spirituality”.

चित्र 2

महिलाओं के प्रति स्वामीजी का दृष्टिकोण

किसी भी राष्ट्र की संपद उसकी युवाशक्ति हैं, वही भविष्य बनाएँगी। परंतु वर्तमान समय में युवाएँ अपना संस्कार भूल रही हैं, अपनी संस्कृति को भूलकर विभिन्न अपराध कर रही हैं जैसे-बलात्कार, आतंकवाद को बढ़ावा इत्यादि। यें सभी संकट की सूचना दे रही हें कि हमारे राष्ट्र की युवाएँ राष्ट्र को किस तरफ ढकेल रही है। यह स्थिति अत्यन्त दु:खजनक है। युवाओं में इस बात को जगाने की आवश्यकता है कि महिलाऔं का सम्मान करना चाहिए।

स्वामीजी अपने सम्पूर्ण जीवन में जिस मनोभाव को उद्घाटित करना चाहते थे वह है मानवमुक्ति। स्वामीजी मात्र मनुष्य को लेकर चिंतित थे। मानव किस प्रकार अपनी नीचता, हीनता एवं दीनता का त्याग कर गौरवमय पथ पर आगे बढ़े इसलिए विवेकानन्द जीवन पर्यन्त संग्राम करते रहे।

मनुष्यों में विवेकानन्दजी का कंठस्वर नारी जाति के लिए अधिक मुखरित था। आदिकाल से ही महिलाएँ लांछित अवहेलित तथा लुंठित हो रही थी। नारीयों को पौराणिक कथाओं में भले ही उच्चस्थान मिला हो पर वास्तविकता कुछ और ही हैं । पुरुषशासित समाज होने के कारण महिलाओं का उत्थान आज तक सम्भव नहीं हो पाया हैं।

वर्तमान आधुनिक युग में नारियाँ भले ही हर क्षेत्र में

अग्रसर हो पर वह कुछ शतांश ही है। नारीयों के इस दुर्भाग्य से विवेकानन्द व्यथित थे। वह बोलते थे - "जहाँ महिलाओं का आदर न हो, वे विपद से मुक्त न हो वह समाज, वह देश कभी उन्नत नहीं हो सकता।

विवेकानन्द सोचते थे कि जिस प्रकार पंछी अपने दोनों पंखों के बिना उड़ने में असमर्थ है उसी प्रकार कोई भी समाज केवल मात्र पुरुष दवारा संचलित नही हो सकता उसके लिए महिलाओं का होना भी आवश्यक हें। पुरुष तथा नारी एक दूसरे के परिपूरक हें।

विवेकानन्दजी स्वाधीनता में विश्वास रखते थे और कहते थे कि महिलाओं को स्वतंत्रता दी जाए तभी व अग्रसर हो सकती हैं । स्वामी विवेकानन्द ने अपने जीवनचरित में कहा था - "अमरीकि महिलाओं को अत्यंत भक्ति और श्रद्धा से देखते हैं जो जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका पालन करती है। मैं किंकर्त्वव्यविमूढ़ हो जाता हूँ जब मैं अपने देश की महिलाओं को इस प्रकार देखता हूँ। जहाँ महिलाएँ रूप, गुण तथा भाग्य मैं देवी लक्ष्मी के समान पूजी जाती है, तथा सरस्वती जिसे विद्या की अधिष्ठात्री देवी कही जाती है - ये सभी पवित्र माताएँ है। अगर मैं इस प्रकार की हजारों महिलाओं को खड़ा कर सकूँ जो देवी शक्ति का ही प्रतिरूप है तो स्वयं को धन्य मानूँगा और शांती से मर सकूँगा। तभी देशवासी महिलाओं का मूल्य समझ पाएँगे।"

विवेकानन्दजी ने भारतीय आध्यात्मिक वाणी को लेकर विश्व परि' भ्रमण किया तथा विभिन्न देशों के संपर्क में आए। उन्होंने देखा कि वहाँ कि नारियाँ भारतीय नारीयों से अत्याधिक स्वाधीन है। भारतीय नारियाँ बेड़ियों में जकड़ी हुई है जबकी पाश्चात्य नारियाँ कर्मशील है तथा मुखरीत होना चाहती है। भारतीय नारियों में संकोच की भावना है।

परंतु भारतीय नारियाँ जिस गुण में विश्व नारियों से आगे है वह है भारतीय नारियों की आध्यात्मिकता और विवेकानन्दजी ने इसी गुण को विश्व के समक्ष रखा। भारतीय समाज में आध्यात्मिकता की गहराई है। और
विवेकानन्दजी चाहते थे कि भारतीय नारियाँ उसी गुण के साथ पश्चिम के कर्मठता तथा प्रसारता का स्वागत करे ॥ परंतु यह कार्य अत्यन्त कठिन है और केवल शिक्षा के माध्यम से ही इसे सफल बनाया जा सकता है और इसीलिए विवेकानन्दजी यही कामना करते थे कि भारतीय नारियाँ चतुर्मुखि प्रगति करे और प्रगति के उच्च शिखर तक पहुँचे ।

आप सभी ने भगिनी निवेदिता का नाम सुना होगा जो स्कॉटिश -आइरिश समाज-सेविका थी तथा स्वामी विवेकानन्द जी की शिष्या भी | उन्होंने अपना यौवन आयरलैडं में बिताया था। अपने पिता तथा शिक्षकों से उन्होंने मानव सेवा तथा ईश्वर के सेवा की शिक्षा पाई थी। वे १८९५ में लंडन में स्वामीजी से मिली और उनसे प्रभावित हुई। स्वामीजी ने उनको ईश्वरीय ज्ञान से अवगत कराया। निवेदिता जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सेवा तथा ईश्वरीय अराधना में बिता दिया और अपना सर्वस्व भारत के लिए समर्पित किया।

सभी युवाओं के प्रति स्वामीजी का उपदेश

ब्रिटिश शासन के अंत होने से ५० वर्ष पहले ही मद्रास में युवाओं के प्रति स्वामीजी ने अपना विश्वास जताया था। स्वामीजी खुद ही कर्मशील तथा युवाओं में स्पंदन उत्पन्न करने वाले अवतार थे। उनके जीवन तथा आदर्श राष्ट्र के युवाओं के लिए प्रेरणा का श्रोत है। अपने ३९ वर्ष, ५ महीने और २२ दिन के छोटी सी उम्र में उन्होंने अपने संदेश द्वारा संपूर्ण विश्व में विजय प्राप्त कर ली थी। भारतऔर देश-विदेश के बड़े-बड़े व्यक्तित्व भी स्वामीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए थे।

स्वामीजी कहते थे कि सभी लोग ईश्वर की संतान है, सबमें पवित्र और पूर्ण आत्मा बसते है इसलिए कोई भी स्वयं को जबरदस्ती दुर्बल न समझे। वे कहते थे कि युवाओं उठो और साहसी बनो, वीर बनो पूरा उत्तरदायित्त्व अपने कंधो पर लो क्योंकि आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो। सम्पूर्ण शक्ति तुम्हारे ही भीतर विद्यमान हैं।

अपने में साहस लाओं जिससे सत्य को जान सको, जीवन में निहित सत्य को जान सको और मृत्यु से न डरो। जब

तुम समझ सको कि तुम आत्मा हो और जगत की कोई वस्तु तुम्हारा विनाश नही कर सकती। तब तुम मुक्त हो जाओगे। तब तुम अपनी पवित्र आत्मा को जान सकोगे।

हमारे समाज में कुछ पाखंड पुरोहित है जिनकी सोच संकुचित है वे सदा उन्नति के मार्ग में बाधक है। वे अंधविश्वास, अत्याचार और कुरीतियों में जकड़ी हुई है इन्हे जड़ से निकालना होगा। मनुष्य बनो, बाहर निकलो और बाहर दृष्टि डालो।

हिंसा तथा अहंकार को हमेशा के लिए गंगाजी में विसर्जित कर दो एवं पूर्ण शक्ति के साथ जुट जाओं। ईश्वर ही तुम्हारा पथ प्रदर्शन करेंगे।

"वीर बनो, आगे बढ़ो। उच्चतम आदर्श पर दृढ़ रहो, स्थिर रहो। स्वार्थ परता और ईर्ष्या से बचो। आज्ञा का पालन करो » सत्य मनुष्य जाति और अपने देश के पक्ष पर सदा के लिए अटल रहो और तुम संसार को हिला दोगे ॥ याद रखो, व्यक्ति और उसका जीवन ही शक्ति का श्रोत है। इसके सिवाय अन्य कुछ भी नहीं"।

स्वामीजी के इस प्रकार के तेजस्वी विचार लोगों के मन को प्रज्वलित करते थे। उनके विचार से किसी के भी जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आ साकता है। वर्तमान समय में देश की युवाएँ कई समस्याओं से जूझ रही है और निश्चित ही स्वामीजी का संदेश उनके जीवन में शक्ति का संचार कर सकती है तथा भविष्य के लिए नई राह सूझा सकती है। इसके लिए कूछ बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है :-

- **जीवन का लक्ष्य**

स्वामीजी हमेशा कहते थे कि व्यक्ति का जीवन तभी सार्थक है जब उसके जीवन का कोई लक्ष्य है अन्यथा उसका जीवन निरर्थक है। यौवन काल सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल जो सर्वदा अगणनीय एवं अवर्णनीय हैं। यौवन समय आपके भविष्य का सूचक है। आपकी खुशियाँ, आपका साफल्य, आपका सम्मान, तथा आपका यश सब कुछ निर्भर है कि आप वर्तमान कैसा जी रहे है। आपके जीवन का यह समय ठीक वैसा ही है जैसा कुम्हार के हाथ में मिट्टी का गोला कुम्हार बड़ी निपुणता से मनचाहा आकार देता जाता है और बनाता जाता है। आपको भी जीवन का कुम्हार बनना है।

स्वामीजी कहते थे कि युवको को सर्वप्रथम जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। कुछ बनने से पूर्व कार्य करते रहना आवश्यक है तभी आप निश्चित ही कुछ बन पाएँगे। जब जीवन का उद्देश्य स्पष्ट हो तो सभी कार्य अपने आप सुलझते जाते है।

- **आत्मविश्वास**

जीवन में कुछ करने से पहले आवश्यक है आत्मनिर्भर बनने की। तथा इससे भी अधिक आवश्यक है कि आपकी ईश्वर में आस्था हो।

वह नास्तिक है जिसे खुद पर विश्वास न हो। पौराणिक धार्मिक मतानुसार वह सर्वाधिक नास्तिक है जिसे ईश्वर पर विश्वास नही है। दूर्भाग्यबश हमने अपने आपको समेट लिया है। कई बार हमेँ लगता है कि हम कुछनहीं कर पाएँगे जबकि हममें काबिलियत है। अगर हमारे युवा एकनिष्ठ है तो विश्व के किसी भी चीज को प्राप्त करना उनके लिए संभव है।

स्वामीजी सर्वदा विश्वास रखते थे कि हमारे चारों ओर जो कुछ भी घट रहा है चाहें वह छोटा हो या बड़ा सकारात्मक हो या नकारात्मक हमे उसी से अवसर चुनना होगा।

- **एक निष्ठता**

किसी भी कार्य में सफल होने का मूल मंत्र है एकनिष्ठता। स्वामीजी ने एक बार कहा था -सफलता के लिए अध्यवसाय तथा अत्याधिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है, मैं समुद्र को निगल जाऊँगा, अध्यावसाय आत्मा ने कहा, मेरी इच्छाशक्ति से पहाड़ भी टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे। इस प्रकार की इच्छा-शक्ति, परिश्रम करने की क्षमता जिस इंसान में भी होगी वही अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है।

- **सहयोगिता**

यह युग सहयोगिता तथा सांगठनिक कार्य का युग है ॥ भले ही वह विज्ञान हो तकनीकि तथा व्यवसाय का क्षेत्र क्यों न हो सफलता के लिए सहयोग तथा सांगठनिक कार्य की आवश्यकता है। जब स्वामीजी अमेरीका में थे तो वहाँ दलबद्धता तथा सांगठनिक कार्य से बड़े प्रभावित हुए थे और भारत में भी इस विचार को फैलाना चाहते थे। इसी के उदाहरणस्वरूप रामकृष्ण मिशन कि स्थापना की तथा सभी सन्यासियों को राष्ट्रनिर्माण के कार्य के लिए प्रेरित किया।

भारत ने सन-२०१३ में स्वामी विवेकानन्दजी की १५० (एक सौ पचासवी) जन्मजयंती पालन किया और गुजरात ने तो स्वामीजी के स्मरण में इस पूरे वर्ष को युवा शक्ति वर्ष के रूप में पालन किया था, यही उचित समय है जब हम स्वामी विवेकानन्द के आदर्शो को माने और हमारे युवा राष्ट्र को विश्व की ऊँचाई तक ले जाए।

महत्वपूर्ण स्मरणीय दिवस

- **राष्ट्रीय युवा दिवस**

सन १९८४ मैं भारत सरकार ने स्वामी विवेकानन्द की जन्मतिथि को राष्ट्रीय युवा दिवस मनाने की घोषणा की थी। तब से विवेकानन्दजी का जन्मदिन 12 जनबरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रुप में मनाया जाता हें। भारत ने सन् २०२१ में भी स्वामी विवेकानन्द जी की राष्ट्रीय युवा दिवस को पालन किया।

चित्र 3

इसका मुख्य कारण था स्वामीजी देश भर के सभी युवाओं के लिए प्रेरणा थे। स्वामीजी का व्यक्तित्व असाधारण था और उनकी प्रतिभा का लोहा दुनिया को मानना पड़ा था। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य था युवाओं की ऊर्जा को जागृत करने के साथ-साथ देश को विकसित बनाने का बढ़ा कदम हैं।

- **विश्व भ्रातृत्व दिवस**

२२ सितम्बर को विश्व भ्रातृत्व दिवस पालन किया जाता है क्योंकि इसी दिन उन्होंने १८६३ में शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में अपना प्रथम भाषण दिया था तथा अमरीकी लोगों को यह कहके संबोधित किया था कि - अमरीका के बहनों तथा भाइयों।

निष्कर्ष

सदियों पहले जब विश्व ने पूँजिवाद, धनतन्त्रवाद, तथा प्रजूक्तिविद्या की अवधारणा ने विश्वव्यापी ग्राम की कल्पना की थी तब भारत ने एक सच्चे विश्यव्यापी नागरिक के रूप में विश्व को स्वामी विवेकानन्द प्रदान किया था। स्वामीजी ने घोषणा की थी कि शांति हेतु इंसान की चेष्टा तब तक बनी रहेगी जब तक पश्चिमी सभ्यता यह नहीँ स्वीकारती की भारतीय समाज आध्यात्मिक तथा सभ्यता की दृष्टि से सबसे अग्रगण्य है तथा विश्व उन्हें अपने आधुनिक भावनाओं, चिन्ताओं और कल्पनाओं को भारतीय सोच से नही मिला लेती।

भारत सरकार ने सन् १९८५ से लेकर हर वर्ष यानी उनके जन्मदिवस को राष्ट्रीय युवा दिवस" के रूप में पालन करने का निश्चय किया। क्योंकि इसके पीछे यह अवधारणा रही की स्वामीजी के दर्शन तथा चिंतन जिसके लिये स्वामी ने कठोर परीश्रम किया वहीँ सोच भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का श्रोत बन सकती हैं।

भारत ने सन् २०१३ में स्वामी विवेकानन्द जी की १५० वी वर्षगाँठ को पालन किया। युवा और खेल मंत्रालय ने भारत में इसकी राजकीय घोषणा की थी। रामकृष्ण मठ के विभिन्न शाखाओं में इस दिन विभिन्न कार्यक्रमों का

आयोजन किया गया। इसके अलावा विभिन्न शिक्षा संस्थानों में भी कई धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

सन्दर्भ सूची

1. विवेकानन्द वाणी, महावीर प्रसाद सिंह माधव
2. विवेकानन्द संचयन
3. ज्ञानगंगा पत्रिका
4. मोहे निर्मोहे स्वामीजी, सम्पादक, रजतशुभ्र मजूमदार
5. दैनिक संवाद, बंग्ला समचार पत्र, दिनांक १२ जनवरी, २०१७, पृष्ठ – ४
6. Yoga, A Way of life - Sri Swami Adhyatmananda.
7. विवेकानन्द साहित्य, प्रथम खण्ड
8. १-६ सितम्बर, १८६३ शिकागो वक््तृता
9. पत्रावली प्रथम भाग,पृष्ठ - २००
10. पत्रावली प्रथम भाग, पृष्ठ – २०२
11. विवेकानन्द साहित्य, तृतीय यंड, पृष्ठ – ९८६
12. अग्निमंत्र, पृष्ठ – २६
13. अग्निमंत्र, पृष्ठ -११
14. अग्निमंत्र, पृष्ठ -१४
15. प्रेमयोग, पृष्ठ -१५
16. १-६ सितम्बर, १८६३ शिकागो, वक्तृता पृष्ठ – १२
17. ज्ञानगंमा, पृष्ठ – २६
18. विवेक-वाणी, पृष्ठ – २८
19. ज्ञानगंगा, पृष्ठ – १६३
20. विवेकानन्द साहित्य, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ - २२-२३
21. अग्निमंत्र, पृष्ठ – ९
22. विवेकानन्द साहित्य, पञ्चम खण्ड, पृष्ठ – २९०
23. ज्ञानगंगा, पृष्ठ – १८६
24. ११ सितम्बर, १८६३ शिकागो, वक््तृता पृष्ठ – ७
25. विवेकानन्द साहित्य, तृतीय पृष्ठ – ६०